मैं तो बिगड़या

मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई।
बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई।।

मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा।।

लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई।
मैं डारया घर जारया हँसते, सो लोक राखत घर रोई।।

देत दिखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची लोकाई।
मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई।।

मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई।।

सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई।
महामत कहे मैं या विध बिगड़्या, तुम जिन बिगड़ो भाई।।